इकाई 11 लिंग और पर्यावरण*

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 लिंग (Gender) और पर्यावरण का अंतर्संबंध

11.3 लिंग (Gender) क्या है?

11.4 भौतिक संबंधी चिंताएं

11.5 वैचारिक पहलू: पारिस्थितिक नारीवाद (Ecofeminism)

11.6 भारतीय पारिस्थितिकी नारीवाद

11.7 सारांश

11.8 शब्दावली

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.10 संदर्भ ग्रंथ

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जानेंगे:

* डॉ. नयना दासगुप्ता, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, लेडी श्री राम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

- पुरूषों और महिलाओं के लिए पर्यावरणीय मुद्दे और सरोकार कैसे भिन्न हैं और पर्यावरण के साथ लिंग संबंध;
- 'जननांग' और लिंग के बीच वैचारिक अंतर;
- पर्यावरण का क्षरण पुरूषों की तुलना में महिलाओं को कैसे अधिक प्रभावित करता है?
- पारिस्थितिकी के साथ 'लिंग' संबंध के भौतिक और वैचारिक पहलू;
- सामान्य रूप से पारिस्थितिक नारीवाद और विशेष रूप से भारतीय नारीवाद की आलोचना; तथा
- नारीवादी पर्यावरणवाद की अवधारणा।

11.1 प्रस्तावना

क्या पर्यावरण शब्द का अर्थ सभी के लिए समान है? क्या सभी मनुष्यों, समूहों और समाजों को पर्यावरण के संबंध में समान सरोकार हैं? या लोगों के विभिन्न समूहों के लिए पर्यावरणीय मुद्दे और सरोकार अलग–अलग हैं? इस इकाई में हम इन प्रश्नों का परीक्षण करने का प्रयास करेंगे।

11.2 लिंग (Gender) और पर्यावरण का अंतर्संबंध

पिछली इकाइयों से, जिनका आपने अब तक अध्ययन किया है, आप पहले ही समझ चुके होंगे कि जब इतिहासकार और अन्य सामाजिक वैज्ञानिक पर्यावरण के मुद्दों की जांच करते हैं तो वे विश्लेषण के ऐसे साधनों का उपयोग करते हैं जो भौतिक वैज्ञानिकों जैसे अन्य विशेषज्ञों से भिन्न होते हैं। ये उपकरण मूल रूप से विश्लेषणात्मक श्रेणियां हैं जिन्हें सामाजिक वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया

गया है, जैसे जाति, वर्ग, लिंग, नस्ल, क्षेत्र आदि। इसका कारण यह है कि सामाजिक वैज्ञानिक पर्यावरण के प्रश्नों को अलग–थलग नहीं देखते, बल्कि उन्हें मानव समाज के संबंध में देखते हैं। नतीजन, सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक चिंताएं उन तरीकों के बारे में है जिनके माध्यम से मनुष्य अपने पर्यावरण और उसके परिवर्तनों के लिए अनुकूलन कर रहे हैं, जिस तरह से मानव समाज पर्यावरण को प्रभावित कर रहे हैं, जिस तरह से पर्यावरण मानव को प्रभावित कर रहा है।

अब हम सभी जानते हैं कि मानव समाज, किसी भी समय या स्थान पर, समरूप श्रेणी के रूप में नहीं माना जा सकता है, लेकिन एक ऐसी श्रेणी के रूप में जो विविध और पदानुक्रमों और अंतर्निहित असमानताओं के साथ स्तरित है। ये असमानताएँ ज्यादातर समाज के भीतर शक्ति के असमान वितरण के परिणामस्वरूप होती है; जिसकी वजह से पर्यावरणीय संसाधनों सहित संसाधनों तक असमान पहुँच होती है। तार्किक रूप से समझे तो मानव समाज और पर्यावरण के बीच संबंध एक समान या सार्वभौमिक नहीं हो सकते है। पर्यावरण के प्रति हमारी प्रतिक्रिया, मध्यवर्तन और अनुकूलन के साथ–साथ पर्यावरण परिवर्तन और हम पर दुर्दशा के प्रभाव के संदर्भ में, सामाजिक साँचे या सामाजिक पदानुक्रम के भीतर हमारे स्थान के आधार पर भिन्न होती है, जिसका हम हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए, विकासशील देशों के पर्यावरण के मुद्दें विकसित देशों के लोगों से अलग होंगे, गरीबों के अमीर लोगों से अलग होंगे, शहरी क्षेत्रों के ग्रामीण इलाकों से अलग होंगे और कृषि समुदायों की चिंताएं, खानाबदोश चरवाहे और वन जनजातियों से बहुत भिन्न होंगी। इसी

तरह, पुरूषों और महिलाओं के पर्यावरण संबंधी सरोकार भी काफी भिन्न पाए गए है। दूसरे शब्दों में, पर्यावरण के साथ हमारा संबंध 'लैंगिक' है और यही इस इकाई में चर्चा का विषय है। इसका मतलब यह है कि यहाँ हम निश्चित रूप से महिलाओं के पर्यावरण के साथ संबंधों का पता लगाएंगे, लेकिन यह चर्चा केवल महिलाओं और पर्यावरण के बारे में नहीं है। हम लिंग की अवधारणा का उपयोग करके इससे भी आगे जाने का प्रस्ताव करते हैं।

11.3 लिंग (Gender) क्या है?

इससे पहले कि हम आगे बढ़े, हमें इस बात का अंदाजा होना चाहिए कि लिंग क्या है, जिसे अक्सर स्त्री–पुरुष भेद के साथ भ्रमित किया जाता है। जबकि स्त्री–पुरुष भेद की पहचान जननांग के आधार पर होती है, लिंग पुरूषों और महिलाओं के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर हो संदर्भित करता है। ये अंतर सीखे हुए व्यवहार प्रतिक्रियाओं और अपेक्षाओं पर आधारित होते हैं जो किसी भी सांस्कृतिक संदर्भ में पुरूष या महिला होने से जुड़े होते हैं। लिंग प्रतिकात्मक रूप से निर्मित होता है। इसका मतलब यह है कि प्रत्येक संस्कृति लिंग के मुद्दे से संबंधित अर्थों और प्रतीकों के एक कोष का निर्माण करती है जिसक अंतर्गत पुरूष और महिला दोनों कार्य करते है। इसलिए पुरूष और महिला इतिहास में निश्चित जैविक निर्धारकों के अनुसार काम कर रहे सार्वभौमिक या निश्चित श्रेणियां नहीं हैं। लिंग संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू शक्ति है। लिंग के संचालन से अर्थ और मूल्य के पदानुक्रम उत्पन्न होते हैं। चलिए, हम एक उदाहरण पर विचार करते हैं। कई संस्कृतियों ने प्रजनन भूमिकाओं जैसे कि बच्चों का पालन पोषण, खाना पकाना, सफाई और अन्य

घरेलू गतिविधियों के साथ महिलाओं को जोड़ा है। वहीं उत्पादक भूमिकाओं जैसे कि खेतों और कारखानों में काम करने, घर के बाहर अन्य आय सृजन गतिविधियों के साथ पुरूषों को जोड़ा है। हालांकि ऐसा करते समय वहीं संस्कृतियाँ अक्सर पूर्व की तुलना में बाद वाले को अधिक महत्व देती हैं। बहुत बार हम यह मान लेते है कि यह किसी मूल्य की वस्तुपरक गणना पर आधारित है, हालांकि वास्तविक मूल्यांकन से अक्सर पता चलता है कि गैर–मुद्रीकृत घरेलू कार्य मुद्रीकृत 'उत्पादक' कार्य के बराबर या अधिक मूल्य का हो सकता है। इसलिए अधिक और कम मूल्य की हमारी धारणा स्पष्ट रूप से लिंग मानदंडों के मूक और अगोचर संचालन पर आधारित है जो इस तरह के पदानुक्रम बनाता है। आइए अब हम पर्यावरण के साथ 'लैंगिक' संबंधों का पता लगाना शुरू करें। हम इस संबंध पर दो आयामों के संदर्भ में चर्चा करेंगेः

1) भौतिक,

2) वैचारिक

हालांकि ये पहलू आपस में जुड़े हुए है, हम अधिक वैचारिक स्पष्टता के लिए इन पहलुओं को अलग मानेंगे।

11.4 भौतिक संबंधी चिंताएं

प्राकृतिक पर्यावरण जिसमें हम रहते है वह भौतिक दुनिया का प्रमुख घटक है और पर्यावरण विनाश उस भौतिक वास्तविकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है, पर्यावरणीय विनाश का प्रभाव सीमांत समूहा, समुदायों और व्यवसायों पर उन लोगों से अधिक है जो समृद्ध,

विशेषाधिकार प्राप्त और शक्तिशाली है। हालांकि, भारत के एक प्रमुख पर्यावरण विद्वान अनिल अग्रवाल के अनुसार यह प्रभाव सभी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा और विशेष रूप से गरीब भूमिहीन, सोमांत और छोटे किसान परिवारों की महिलाओं द्वारा सबसे अधिक महसूस किया गया है। अनिल अग्रवाल की राय में, अगर हम ऐसी महिलाओं के दृष्टिकोण से देखे तो हम कह सकते है कि सभी विकास महिलाओं की जरूरतों से अनभिज्ञ है, और शायद महिला विरोधी भी हैं। उनका कहना है कि 'प्रगति की कीमत अक्सर महिलाओं को उनके बढ़ते बोझ के रूप में चुकानी पड़ती है। आइए हम ग्रामीण भारत के अधिकांश हिस्सों से ठोस और बहुत ही बुनियादी तथ्य से शुरूआत करके उपरोक्त को समझने की कोशिश करे। घर के भीतर श्रम विभाजन की पारंपरिक धाराणाओं ने सभी घरेलू जरूरतों के लिए ईंधन, चारा और पानी इकट्ठा करने की जिम्मेदारी मुख्य रूप से महिलाओं पर डाल दी है। उनसे आस–पास के प्राकृतिक संसाधनों से इन्हें इकट्ठा करने की उम्मीद की जाती है। पर्यावरण जितना खराब होता है, खोज उतनी ही लंबी और कठिन होती है। देश के आर्थिक शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में यह पाया गया है कि महिलाओं को इन बुनियादी संसाधनों को इकट्ठा करने के लिए लगभग पांच से छह घंटे और कुछ मामलों में प्रतिदिन 10 घंटे तक खर्च करने के लिए मजबूर किया जाता है; जिसके बिना वे दिन की घरेलू शुरुआत भी नहीं कर सकती है जैसे कृषि क्षेत्रों में काम करने के अलावा खाना पकाने, साफ–सफाई और पशुओं की देखभाल जैसे काम। इसके विपरीत, तुलनात्मक रूप से समृद्ध प्राकृतिक वनस्पति वाले क्षेत्रों में महिलाओं पर काम का बोझ अपेक्षाकृत हल्का होता है। एक अच्छा उदारहण केरल है जहां समृद्ध हरित आवरण के अलावा भूमि सुधारों

ने भी इसमें योगदान दिया है। लगभग प्रत्येक ग्रामीण परिवार के पास कम से कम कुछ दर्जन नारियल के पेड़ है, जिससे ईंधन की आवश्यकताओं को पूरा करना बहुत आसान हो गया है। जैव ईंधन (Biomass) की कम उपलब्धता के क्षेत्रों में महिलाओं के काम के बोझ में भारी वृद्धि का उनके जीवन के सभी पहलुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, मुख्य रूप से स्वास्थ्य सेवा। ज्यादातर महिलाओं के पास चिकित्सा देखरेख या बिमारी में आराम करने का समय नहीं होता है। यहां तक कि गर्भवती महिलाओं को प्रसव के समय तक दिन में 14 घंटें काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। ऐसी जीवन–यापन पद्धति में उन्हें बच्चे के जन्म के कुछ ही दिनों के भीतर वापस जाने के लिए मजबूर किया जाता है।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि किस प्रकार पर्यावरण दुर्दशा का पुरुषों की तुलना में महिलाओं पर अधिक प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। वनों की कटाई के अलावा, उपरोक्त स्थिति में योगदान देने वाला एक अन्य कारक वन कानून हैं जिन्होंने वन संसाधनों तक पहुंच को गंभीर रूप से प्रतिबंधित करके प्रतिकूल भूमिका निभाई है। एक अन्य महत्वपूर्ण कारक नकद अर्थव्यवस्था का प्रवेश रहा है। इसने पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों और प्रकृति के साथ उनके संबंधित संबंधों को अजीब तरह से प्रभावित किया है। जबकि पुरुष नकद अर्थव्यवस्था में शामिल हो गए हैं, महिलाएं गैर–मुद्रीकृत, जैव–ईंधन निर्वाह अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनी हुई हैं। घर के भीतर इस द्वंद्व का दुखद परिणाम यह है कि पुरुष अक्सर नकद कमाने के लिए उन्हीं प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट करने के इच्छुक होते हैं, जिन पर उनके अपने घर की महिलाएं ईंधन

और चारे जैसी घरेलू जरूरतों के लिए निर्भर होती हैं। अग्रवाल की राय में नकदी अर्थव्यवस्था के प्रवेश से प्रकृति के प्रति नए दृष्टिकोणों के परिणामस्वरूप पुरुषों का उनके पारिस्थितिकी तंत्र से मनोवैज्ञानिक अलगाव भी हुआ है। नतीजतन, यहां तक कि जब घर के पुरुषों की कई महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करने वाले पेड़ लगाकर स्थानीय गांव के पारिस्थितिकी तंत्र के पुनर्वास की बात आती है, तो ज्यादातर ने बहुत कम दिलचस्पी दिखाई है। पुरुषों के लिए रोजगार का अर्थ आमतौर पर वह काम होता है जो नकद आय उत्पन्न करता है। यहां तक कि जब ऐसा रोजगार उपलब्ध नहीं होता है, तब भी पुरुष स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करने के लिए बहुत कम काम करते हैं। नौकरियों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से कस्बों और शहरों में बड़े पैमाने पर पुरुष प्रवास की घटना भी इस समझ का परिणाम है कि घरेलू जरूरतों को केवल नकद कमाई से ही पूरा किया जा सकता है। इससे महिलाओं पर काम का बोझ और भी बढ़ गया है, क्योंकि कृ षि क्षेत्र में भी अब पुरुषों की अनुपस्थिति में महिलाओं को अकेले ही काम करना पड़ता है। बेशक, गरीब ग्रामीण परिवारों में नकदी की जरूरत वास्तविक है। हालाँकि, शहरी क्षेत्रों में प्रवास करने वाले पुरुषों द्वारा अर्जित की गई नकद राशि का अधिकांशतः इतना कम मूल्य होता है, इसका अधिकांश भाग शहरों में रहते हुए अपनी जरूरतों पर खर्च किया जाता है, कि यह कभी भी घरेलू जरूरतों के लिए पर्याप्त नहीं होता है। इसके विपरीत, महिलाएं घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए अभी भी आसपास के प्राकृतिक वातावरण से 'मुक्त' सामान के रूप में आवश्यक वस्तुओं को एकत्रित करना जारी रखती है। इसलिए, यह आश्चर्यजनक नहीं है कि वनीकरण के कार्यक्रमों में महिलाओं की

भागीदारी सबसे अधिक उत्साही पाई गई है। दिन में 14 से 16 घंटे के अपने कठिन दिनचर्या के बावजूद महिलाएं ऐसे कार्यक्रमों में योगदान देने के लिए बेहद उत्सुक रही हैं, विशेष रूप से वृक्षारोपण में, जिन्हें अक्सर पुरुषों द्वारा बनाई गई बाधाओं से जूझना पड़ता है। वनरोपण कार्यक्रम जिनमें पुरुषों की भागीदारी रही है, वे ज्यादातर नकद मकसद वाले हैं जैसे कि यूकेलिप्टस और अन्य व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों के वृक्षारोपण के आसपास केंद्रित सामाजिक वानिकी कार्यक्रम। भले ही इस तरह के कार्यक्रमों को विश्व बैंक द्वारा बड़ी सफलताओं के रूप में सराहा गया हो, क्योंकि इनसे भरपूर नकद लाभ मिले हैं, इनका अक्सर आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है, उदाहरण के लिए यूकेलिप्टस के पेड़ों के मामले में, जिसके परिणामस्वरूप भूजल में भारी कमी होती है। . कोई आश्चर्य नहीं कि 'नर वृक्ष' और 'स्त्री वृक्ष' ऐसे शब्द हैं जो पर्यावरण के उत्थान में शामिल सक्रिय समूहों के बीच शब्दावली का सामान्य हिस्सा हैं।

11.5 वैचारिक पहलू: पारिस्थितिक नारीवाद (Ecofeminism)

पृष्ठभूमि के रूप में भौतिक पहलुओं पर चर्चा के साथ आइए हम इस संबंध के वैचारिक पहलुओं और इस पर बहस करने के लिए आगे बढ। पर्यावरण इतिहासकार डोनाल्ड वॉर्स्टर बताते हैं कि प्रकृति मानव अस्तित्व में न केवल वस्तुनिष्ठ भौतिक वास्तविकता के रूप में बल्कि भावों, अर्थों, विचारों और भावनाओं के रूप में भी है। उन तरीकों को समझना महत्वपूर्ण है जिसमें व्यक्तियों और समाजों ने समय और स्थान में प्रकृति की कल्पना की है, क्योंकि पर्यावरण के प्रति हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार और जिस तरीके से हम उस

पर कार्य करते हैं, उसके साथ हमारे महत्वपूर्ण संबंध हैं। यह आधुनिक विज्ञान के युग में भी अच्छा है क्योंकि, जैसा कि वे कहते हैं, वैज्ञानिक "अपने समाजों से पूर्ण अलगाव में काम नहीं करते हैं, बल्कि प्रकृति के अपने मॉडल मं उनके समाज, उत्पादन के तरीके, मानवीय संबंध, संस्कृति की जरूरतों और मूल्यों को दर्शाते हैं।" इसलिए, वह पर्यावरण इतिहास के विद्वानों के लिए "पारिस्थितिक एजेंटों" के रूप में विचारों की जांच करना सार्थक मानते हैं।

भारत और विकासशील देशों के अन्य हिस्सों के विपरीत, लिंग और पर्यावरण के बीच संबंध मुख्य रूप से पश्चिमी, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में पारिस्थितिक नारीवाद की छत्रछाया के तहत वैचारिक दृष्टि से अवधारणाबद्ध किया गया है। इस खंड में हम उन मुख्य तर्कों की जांच करेंगे जो पारिस्थितिक नारीवाद के समर्थकों और उनके बीच असहमति के समर्थकों द्वारा सामने रखे गए हैं।

पारिस्थितिक नारीवाद के निरूपण में प्रकृति के साथ पुरुषों और महिलाओं के संबंध धारणा, विचार और कल्पना के दायरे में रखा गया है। सामाजिक साँचे में अपने स्थान के आधार पर अलग–अलग लोगों द्वारा पर्यावरण की अवधारणा के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करते हुए, वर्स्टर कहते हैं, ''पुरूष और महिलाएं हर जगह कम या ज्यादा विशिष्ट क्षेत्रों में अलग रूप से स्थापित हुए है, उन्होंने प्रकृति का विभिन्न तरीका से और कभी–कभी तो मौलिक रूप से आंकलन किया है''। पारिस्थितिक नारीवादियों की जाँच यही है:

1) जिस तरह से पुरुष और महिलाएं प्रकृति की अवधारणा करते हैं,

2) पितृसत्तात्मक सोच में प्रकृति के बारे में कल्पना किस तरह से लैंगिक है, और

3) ऐसी कल्पना का महिलाओं के जीवन और प्रकृति पर प्रभाव।

व्यापक, सामान्य शब्दों में व्यक्त पारिस्थितिक नारीवाद पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना के वैचारिक ताने–बाने के भीतर प्रकृति के शोषण को स्थापित करता है। यह उस तरीके की ओर भी इशारा करता है जिसमें महिलाओं के साथ–साथ प्रकृति के अधीनता को व्यक्त किया जाता है और बहुत समान अलंकारिक शब्दों में उचित ठहराया जाता है जो पितृसत्तात्मक प्रवचन की शब्दावली का हिस्सा हैं। इसलिए, पारिस्थितिक नारीवादियों के अनुसार यह तार्किक रूप से सही है कि नारीवादी आंदोलन को खुद को पर्यावरण आंदोलन के साथ इस तरह से संरेखित करना चाहिए कि पितृसत्ता के खिलाफ उसका संघर्ष न केवल महिलाओं की बल्कि प्रकृति की भी मुक्ति की अभिव्यक्ति बन जाए।

पश्चिमी पारिस्थितिक नारीवादी प्रवचन के भीतर केंद्रीय विचारों के बीना अग्रवाल के सारांश को देखना उपयोगी होगा। यह बहस में प्रवेश करने के लिए उपयोगी शुरुआती बिंदु के रूप में काम कर सकता है। उनके निबंध से उद्धृत ये विचार इस प्रकार हैं:

- महिलाओं पर प्रभुत्व और उत्पीड़न और प्रकृति पर प्रभुत्व और शोषण के बीच महत्वपूर्ण संबंध हैं;

- पितृसत्तात्मक कल्पना में महिलाओं को 'प्रकृति' के मूर्त तत्वों के रूप में देखा जाता है जबकि पुरुष 'संस्कृति' का प्रतिनिधित्व करते हैं;
- चूंकि प्रकृति–संस्कृति द्विगुण को पदानुक्रमिक शब्दों में समझा जाता है जहां संस्कृति प्रकृति से श्रेष्ठ है, उसी तर्क से महिलाओं को पुरुषों से कमतर के रूप में देखा जाता है;
- महिलाओं पर प्रभुत्व और प्रकृति पर अधिकार के बीच घनिष्ठ संबंध के कारण प्रकृति पर प्रभुत्व को समाप्त करने में व "अलग–थलग पड़े मानव और गैर–मानव प्रकृति को ठीक करने में" महिलाओं की विशेष जिम्मेदारी है;
- चूंकि नारीवादी आंदोलन और पर्यावरण आंदोलन दोनों समतावादी, गैर–श्रेणीबद्ध प्रणालियों के लिए प्रतिबद्ध है, इसके अलावा कई अन्य मूल्य समान हैं, यह तर्क दिया जा सकता है कि उन्हें एक सामान्य परिप्रेक्ष्य, सिद्धांत और व्यवहार विकसित करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

पारिस्थितिकी नारीवाद सैंद्धांतिक निरूपण के दल के साथ–साथ एक आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, पारिस्थितिकी नारीवाद का इतिहास इसके लेखन और दुनिया भर में पर्यावरणीय मुद्दों और जमीनी संघर्षों में महिलाओं की व्यापक भागीदारी में पाया जाता है।

विचारों और वाद–विवाद की बेहतर समझ के लिए हमें इसकी उत्पत्ति और विकास के संक्षिप्त इतिहास का पता लगाने की आवश्यकता है। पारिस्थितिकी नारीवाद आंदोलन 70 के दशक के मध्य में उभरा और इसके नारीवादी

आंदोलन की दूसरी लहर के साथ–साथ पर्यावरण आंदोलन या हरित आंदोलन, जो 60 के दशक में शुरू हुआ था, के साथ महत्वपूर्ण संबंध थे। यह गैर–मानव दुनिया पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव के बारे में हरित आंदोलन की चिंता से प्रेरित था। नारीवादी आंदोलन से इसने पितृसत्ता में महिलाओं की अधीनता और उत्पीड़न की अपनी आलोचना को आत्मसात किया। इन सरोकारों को मिलाकर पारिस्थितिक नारीवादियों ने मुख्यधारा के नारीवाद को चुनौती दी, जिसमें तब तक पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य का अभाव था; इसके साथ–साथ मुख्यधारा की हरित राजनीति को भी चुनौती दी, जो पर्यावरण के साथ मानव जाति के संबंधों की लैंगिक प्रकृति को ध्यान में रखने में विफल रही थी।

इस संदर्भ में 70 का दशक बहुत दिलचस्प समय था। फ्रांसीसी लेखक फ्रांसुआ डी'ओबोन ने 1972 में पेरिस में पारिस्थितिकी–नारीवाद केंद्र की स्थापना की। उन्होंने शायद पहली बार 1974 में पारिस्थितिकी नारीवाद (Ecofeminism) शब्द का इस्तेमाल किया था। इसके बाद महत्वपूर्ण विकास हुआ। 1974 में बर्कले, कैलिफ़ोर्निया में भूगोलवेत्ता सैंड्रा मारबर्ग और लिसा वॉटकिंस ने "महिला और पर्यावरण" शीर्षक से एक सम्मेलन आयोजित किया। लगभग उसी समय शेरी ऑर्टनर, रोज़मेरी रैडफोर्ड रूथर, सुजान ग्रिफिन और कैरोलिन मर्चेंट के कार्यों में महिलाओं और प्रकृति, नारीवाद और पारिस्थितिकी के बीच अंतर्संबंध भी बनाए जा रहे थे। पारिस्थितिकी नारीवाद ने भी इस समय के आसपास विकसित पाठ्यक्रमों में अपना रास्ता बनाना शुरू कर दिया, जैसे कि 1976 के आसपास वर्मोंट में सामाजिक पारिस्थितिकी संस्थान में नेस्ट्रा किंग द्वारा किया गया।

1980 पारिस्थितिक नारीवाद के प्रारंभिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष बन गया। यह एक प्रमुख सम्मेलन का वर्ष था जिसे किंग और अन्य ने "पृथ्वी पर महिलाएं और जीवनः 80 के दशक में पारिस्थितिकीयवाद" पर आयोजित किया था, उसके बाद 1980 महिला पेंटागन कार्रवाई (Woman's Pantagon Action) की गई थी जिसमें लगभग 2000 महिलाओं ने जीवन विरोधी परमाणु युद्ध और हथियारों का विरोध करने के लिए पेंटागन को घेर लिया था। इन घटनाओं ने 1980 के दशक के दौरान पारिस्थितिक नारीवाद के विचारों के इर्द–गिर्द एक जीवंत आंदोलन को आकार देने का नेतृत्व किया, जो दुनिया भर में छात्रवृत्ति और सक्रियता दोनों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास की श्रृंखला द्वारा चिह्नित है। यह आंदोलन 90 के दशक में अच्छी तरह से जारी रहा और तब से कई किताबें और समाचार पत्र सामने आते रहे हैं और प्रकृति और पर्यावरण के साथ महिलाओं के संबंधों की समझ के आधार पर दुनिया भर में सम्मेलन और पर्यावरणीय कार्य हुए हैं।

पारिस्थितिक नारीवादियों ने पर्यावरणीय नैतिकता के किसी न किसी रूप की वकालत की है जो महिलाओं और प्रकृति पर प्रभुत्व के साथ देखभाल और पोषण, प्रेम और विश्वास से संबंधित है जो अधिकारों, नियमों और उपयोगिताओं पर आधारित पारंपरिक नैतिकता के बजाय महिलाओं के सांस्कृतिक रूप से निर्मित अनुभवों से उत्पन्न होती है। दार्शनिक करेन वॉरेन के शब्दों में, "एक पारिस्थितिक नारीवादी नैतिकता दोनों महिलाओं और प्रकृति पर पुरूषों द्वारा वर्चस्व की आलोचना है और महिलाओं और प्रकृति के बारे में पुरुष–लिंग पूर्वाग्रह से मुक्त नैतिकता की रचना करने का प्रयास है। यह न केवल जाति,

वर्ग, उम्र और जातीय विचारों में स्थित महिलाओं की कई आवाजों को पहचानता है, यह उन आवाजों को कद्रीकृत करता है। महिलाओं और प्रकृति के शोषण में पुरुष वर्चस्व की भूमिका पर एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य विकसित करने में, पारिस्थितिक नारीवाद उन लोगों के कई दृष्टिकोणों पर आधारित है जिनके दृष्टिकोणों को आम तौर पर छोड़ दिया जाता है या प्रमुख प्रवचनों में कम आंका जाता है, उदाहरण के लिए चिपको आंदोलन की महिलाएं। इस प्रकार एक पारिस्थितिक नारीवादी का दृष्टिकोण . . संरचनात्मक रूप से बहुलवादी, समावेशी और संदर्भवादी है और महत्वपूर्ण भूमिका संदर्भ लैंगिकवादी और प्रकृतिवादी अभ्यास को समझने में निभाता है।"

यद्यपि यह पारिस्थितिक नारीवादियों के लिए व्यापक सामान्य आधार रहा है, फिर भी महत्वपूर्ण अंतर भी हैं। पश्चिमी नारीवादी राजनीति से प्रेरित होकर, पारिस्थितिक नारीवाद में अलग–अलग किस्में हैं जो आंदोलन के भीतर ही विभिन्न पदों को दर्शाती हैं, जैसेः

1) उदारवादी,

2) सांस्कृतिक,

3) समाजवादी और अन्य।

कैरोलिन मर्चेंट इन पदों का संक्षिप्त सारांश इस प्रकार प्रदान करती हैः

"उदार पारिस्थितिक नारीवाद नए कानूनों और विनियमों के पारित होने के माध्यम से शासन के मौजूदा ढांचे के भीतर से प्रकृति के साथ मानवीय संबंधों

को बदलने के लिए सुधार पर्यावरणवाद के उद्देश्यों के अनुरूप है। सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवाद ३ पितृसत्ता की आलोचना के भीतर से पर्यावरणीय समस्याओं का विश्लेषण करता है और विकल्प प्रदान करता है जो महिलाओं और प्रकृति दोनों को मुक्त कर सकता है। सामाजिक और समाजवादी पारिस्थितिक नारीवादी पूंजीवादी पितृसत्ता में अपने विश्लेषणों को आधार बनाते हैं। वे पूछते हैं कि कैसे प्रजनन के पितृसत्तात्मक संबंध पुरुषों द्वारा महिलाओं पर वर्चस्व को प्रकट करते हैं और उत्पादन के पूंजीवादी संबंध पुरुषों द्वारा प्रकृति पर प्रभुत्व को कैसे प्रकट करते हैं। बाजार अर्थव्यवस्था में निहित महिलाओं और प्रकृति पर प्रभुत्व को संसाधनों के रूप में दोनों का उपयोग पूरी तरह से पुनर्गठित किया जाएगा। यद्यपि सांस्कृतिक पारिस्थितिक नारीवाद ने स्त्री–प्रकृति के संबंध में अधिक गहराई से जाँच की है, सामाजिक और समाजवादी पारिस्थितिक नारीवाद में वर्चस्व की अधिक गहन आलोचना और एक मुक्त सामाजिक न्याय के लिए क्षमता है।

इन भिन्न स्थितियों के आधार पर पारिस्थितिक नारीवादियों के बीच कुछ महत्वपूर्ण मतभेद हैं। आइए हम पारिस्थितिक नारीवादी प्रवचन के भीतर बहस के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं की रूपरेखा तैयार करने का प्रयास करें। इनमें से कुछ ऐसे बिंदु भी हैं जिनके इर्द–गिर्द पारिस्थितिक नारीवाद की आलोचनाएँ सामने आई हैं। आलोचक और साथ ही कुछ पारिस्थितिक नारीवादी स्वयं इस बात को इंगित करते हैं कि देखभाल की नैतिकता इस विचार का शिकार हो जाती हैं कि महिलाओं का स्वभाव पोषण करना है। यह तर्क दिया गया है कि यह धारणा कि महिलाएं पुरुषों और महिलाओं की तुलना में अधिक देखभाल

करने वाली, अधिक भावनात्मक और अधिक पोषण करने वाली हैं, प्रकृति के करीब हैं जबकि पुरुष संस्कृति के करीब हैं, एक पितृसत्तात्मक निर्माण है। यह घरेलू क्षेत्र और प्रजनन भूमिकाओं में महिलाओं को पुरुषों के अधीन रखने के उद्देश्य से कार्य करता है, जिससे श्रम के पदानुक्रमित रूप से संगठित विभाजन को कायम रखा जाता है। इस प्रकार, निम्नलिखित तर्क यह है कि यदि पारिस्थितिक नारीवादी इस बात से सहमत हैं कि महिलाएं प्रकृति के करीब हैं और पुरुष संस्कृति के करीब हैं, तो क्या वे पितृसत्तात्मक समाज में अपने स्वयं के उत्पीड़न को स्वीकार और मंजूरी नहीं देती हैं?

कुछ पारिस्थितिक नारीवादी ने महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंधों को जीव विज्ञान पर आधारित किया। एरियल के सल्लेह इस पर एक चरम स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है। वह जीव विज्ञान और प्रकृति में भी महिलाओं की चेतना को आधार बनाती है। उसके अनुसार,

"महिलाओं का मासिक प्रजनन चक्र, गर्भावस्था के थकाऊ सहजीवन, बच्चे के जन्म की पीड़ा और एक शिशु को द्‌ध पिलाने की खुशी, ये चीजें पहले से ही प्रकृति के साथ सहसंबद्ध होने में महिलाओं की चेतना को आधार बनाती हैं। यह पहचान कितनी ही मौन या अनजाने में कई महिलाओं की हो सकती है, फिर भी यह जीवन की एक सच्चाई है।"

ऐनी आर्कमबॉल्ट के अनुसार यह "शरीर–आधारित तर्क" है, जिसे कुछ पारिस्थितिक नारीवादी मानती है। इसके विपरीत वह कहती हैं कि पारिस्थितिक नारीवादी हैं जो "उत्पीड़न तर्क" का प्रतिनिधित्व करते हैं जो "इस विश्वास पर आधारित है कि श्रम के यौन विभाजन और संबंधित उत्पीड़न के परिणामस्वरूप

महिलाओं की अलग सामाजिक वास्तविकता ने महिलाओं को प्रकृति के साथ विशेष अंतदृष्टि और संबंध विकसित करने के लिए प्रेरित किया है"। यनेस्ट्रा किंग और कैरोलिन मर्चेंट जैसे पारिस्थितिक नारीवादी इस श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे प्रकृति–संस्कृति द्विभाजन से सहमत नहीं हैं और इसे पितृसत्तात्मक वैचारिक निर्माण के रूप में देखते हैं जिसका उपयोग लिंग पदानुक्रम को बनाए रखने के लिए किया जाता है। हालाँकि, वे इस विचार को स्वीकार करते हैं कि महिलाओं को उनके जीव विज्ञान के कारण वैचारिक रूप से प्रकृति के करीब बनाया गया है और इस निर्माण ने, जो हालांकि पितृसत्ता का एक उत्पाद है, समय के साथ महिलाओं की चेतना को इस तरह आकार दिया है कि वे वास्तव में प्रकृति के करीब महसूस करती हैं। इस प्रकार, यह स्वीकार करते हुए भी कि महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंध का ऐतिहासिक रूप से उनका शोषण करने के लिए उपयोग किया गया है, ऐसे पारिस्थितिक नारीवादियों ने इस संबंध को अपनाने और इसे महिलाओं और प्रकृति के पितृसत्तात्मक उत्पीड़न की आलोचना का आधार बनाया।

हालाँकि, प्रकृति–संस्कृति विभाजन सभी संस्कृतियों में सार्वभौमिक नहीं है, न ही "प्रकृति", "संस्कृति", "पुरुष" और "महिला" के अर्थ मे एकरूपता है, जैसा कि पारिस्थितिकवाद के आलोचकों द्वारा बताया गया है। सामाजिक नृविज्ञान के अध्ययन के साथ–साथ ऐतिहासिक अध्ययनों से पता चला है कि प्रकृति, संस्कृ ति, लिंग आदि जैसी अवधारणाएं ऐतिहासिक और सामाजिक रूप से निर्मित हैं और संस्कृतियों और समय अवधि के अनुसार भिन्न होती हैं। पितृसत्ता को स्थिर, अपरिवर्तनीय स्थिति मानकर और महिलाओं और प्रकृति को कालातीत

समझने वाली वैचारिक संरचनाओं के लिए पारिस्थितिक नारीवादियों की आलोचना की गई है।

इस संबंध में एक महत्वपूर्ण अपवाद कैरोलिन मर्चेंट हैं जो एक ऐतिहासिक विश्लेषण का प्रयास करती हैं। जिस तरह से लोगों ने प्रकृति की कल्पना की है उसका समय के साथ बदलाव की जाँच करती है। वह प्रकृति के बारे में दो भिन्न और विपरीत विचारों की पहचान करती है जो पूर्व–आधुनिक यूरोप में सह–अस्तित्व में थे और महिलाओं और प्रकृति के बीच वैचारिक संबंध का आधार बने।

पहला था प्रकृति का धरती को पालने वाली मां के रूप में। यह अधिक प्रभावशाली छवि थी और इसने प्रकृति के मानव शोषण की सीमा निर्धारित करने का काम किया। उनके अपने शब्दों में, "कोई माँ को आसानी से नहीं मारता, सोने के लिए उसकी अंतड़ियों में खुदाई नहीं करता या उसके शरीर को क्षत–विक्षत नहीं करता ..."। विरोधी छवि प्रकृति की जंगली महिला के रूप में थी, तूफानी और बेकाबू, जो हिंसा, तूफान, सूखा और सामान्य अराजकता प्रदान कर सकती थी। यह छवि सांस्कृतिक रूप से मानव नियंत्रण और प्रकृति पर प्रभुत्व की स्वीकृति देती थी। मर्चेंट के अनुसार, वैज्ञानिक क्रांति के आने और यूरोप में बाजार अर्थव्यवस्था के विकास के साथ, 16वीं और 17वीं शताब्दी के बीच, प्रकृति को एक जैविक और स्त्री इकाई के रूप में कल्पना करने के तरीके समाप्त हो गए। इसे एक यंत्रवत विश्वदृष्टि से बदल दिया गया था जिसमें प्रकृति की कल्पना एक मशीन या निर्जीव संसाधन के रूप में की गई थी जो मानव जाति की जरूरतों को पूरा करने के लिए थी। इसने मनुष्यों द्वारा

प्रकृति पर अधिकार और नियंत्रण के संबंध में सभी नैतिक दुविधा को दूर कर दिया। वह कहती है, "हमारे वर्तमान पर्यावरणीय दुविधा की जड़ और विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अर्थव्यवस्था के साथ इसके संबंधों की जांच में हमें एक विश्व दृष्टिकोण और एक विज्ञान की जांच करनी चाहिए, जो कि वास्तविकता को एक जीव के बजाय एक मशीन के रूप में संकल्पित करके, प्रकृति और महिलाएं पर वर्चस्व को मंजूरी देता है"। इस प्रकार उन्होंने विभिन्न समयों पर पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्मित वैचारिक रचनाओं को ऐतिहासिक बनाने का प्रयास किया है।

वास्तव में पितृसत्ता की अवधारणा का एक समान प्रणाली और अभ्यास के रूप में, जो समय और स्थान में समान रूप से प्रकट होता है, 1980 के दशक के मध्य से लिंग के इतिहासकारों जैसे जोआन स्कॉट और अन्य द्वारा विरोध किया गया है। इसके बजाय, यह सुझाव दिया गया है कि पितृसत्ता को एक गतिशील प्रणाली के रूप में अध्ययन करने की आवश्यकता है, न कि एक ऐसी प्रणाली के रूप में जो समय और स्थान में स्थिर और अपरिवर्तनीय है। इसी तरह, पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के महिलाओं के अनुभव को सार्वभौमिक नहीं समझा जा सकता है। इस संबंध में पारिस्थितिक नारीवादियों की आलोचना के दो बिंदु हैं जो यहां प्रासंगिक हैं।

इनमें से पहली आलोचना यह है कि पारिस्थितिक नारीवादी वर्ग, नस्ल, जातीयता आदि के आधार पर महिलाओं के बीच अंतर करने में विफल रहे हैं, इस प्रकार लिंग के अलावा अन्य वर्चस्व के रूपों की अनदेखी करते हैं, भले ही इनका महिलाओं की स्थिति पर महत्वपूर्ण असर पड़ता है। इसलिए, "महिला"

को एकात्मक श्रेणी के रूप में प्रस्तुत करना, इन अंतर–अनुभागों पर विचार किए बिना, एक समस्याग्रस्त संभावना है और 'अनिवार्यता' की ओर ले जाती है। यह तर्क दिया गया है कि अधिकांश पारिस्थितिकवादी सिद्धांत पश्चिमी दुनिया में महिलाओं के अनुभवों पर आधारित हैं, जो अक्सर अन्य जगहों पर महिलाओं के अनुभवों का ध्यान में रखने में विफल होते हैं, खासकर विकासशील देशों में। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में, गैर–पश्चिमी दुनिया में पारिस्थितिक नारीवादियों ने अपने स्वयं के विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर सैद्धांतिक दृष्टिकोण तैयार करने का प्रयास किया है।

11.6 भारतीय पारिस्थितिकी नारीवाद

वंदना शिवा एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है करती है जो पारिस्थितिक नारीवाद का तीसरे विश्व का परिप्रेक्ष्य है। वह अन्य पारिस्थितिक नारीवादियों से सहमत हैं कि पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के खिलाफ हिंसा प्रकृति के खिलाफ हिंसा के समान है और इन दोनों को वैचारिक रचनाओं द्वारा काफी हद तक आकार दिया गया है। हालाँकि, वह प्रकृति की एक 'भारतीय कल्पना' या पारंपरिक भारतीय ब्रह्माण्ड संबंधी दृष्टिकोण को ''प्रकृति'' के रूप में, "गतिविधि और विविधता" के रूप में और "शक्ति की अभिव्यक्ति, जो ब्रह्मांड के स्त्री और रचनात्मक सिद्धांत" के रूप में हैं, उसे सामने रखती है, जो मर्दाना सिद्धांत (पुरुष) के साथ विश्व–निर्मित करती है। वह कैरोलिन मर्चेंट से सहमत हैं कि आधुनिक औद्योगिक युग ने प्रकृति के बारे में मानव कल्पना को इस तरह से बदल दिया है जिससे मानव जाति द्वारा प्रकृति का क्रूर शोषण हुआ। भारत के संदर्भ में उन्होंने तर्क दिया कि इस तरह के परिवर्तन का एजेंट औपनिवेशिक

राज्य था। पृथ्वी–माता के रूप में प्रकृति की छवि और मनुष्य और प्रकृति के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध के विचार ने मनुष्य को निष्क्रिय प्रकृति से अलग और उस पर हावी होने की धारणा का मार्ग प्रशस्त किया। वह कहती हैं, "प्रकृति या प्रकृति में निहित महिलाओं के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह परिवर्तन एक हिंसक और विघटनकारी था। महिलाओं के लिए ... प्रकृति की मृत्यु उनके हाशिए पर, अवमूल्यन, विस्थापन और अंतिम डिस्पेंसेबिलिटी की शुरुआत है। पारिस्थितिक संकट, स्त्री सिद्धांत की मृत्यु है.."। हालाँकि, वह भौतिक दुनिया में महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए वैचारिक रचनाओं से परे जाती है, जो कि तीसरी दुनिया में ग्रामीण महिलाओं का दैनिक जीविका और अस्तित्व के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर भारी निर्भरता की जाँच करती है। इस प्रकार, वह इस बारे में बात करती है कि इस संदर्भ में प्रकृति के विनाश का महिलाओं के जीवन पर प्रत्यक्ष और हानिकारक प्रभाव कैसे पड़ता है। वह प्रकृति के विशेष ज्ञान पर भी चर्चा करती है जो ऐसी महिलाओं के पास होती है। प्रकृति पर उनकी निर्भरता और इसके बारे में उनका विस्तृत ज्ञान इन महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंधों को वास्तव में एक अंतरंग बनाता है। वह देखती है कि आधुनिक विज्ञान के आगमन के साथ इस संबंध को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया गया है। विशेष रूप से, महिलाओं के ज्ञान को व्यवस्थित रूप से कम करके आंका गया है और हाशिए पर रखा गया है। उनके शब्दों में, "विकास की तरह आधुनिक न्यूनीकरणवादी विज्ञान एक पितृसत्तात्मक परियोजना बन गया है जिसने महिलाओं को विशेषज्ञों के रूप में बाहर रखा है और साथ ही साथ पारिस्थितिकी और जानने के समग्र तरीकों को बाहर रखा

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

है जिससे प्रकृति की प्रक्रियाओं और विज्ञान के रूप में परस्पर संबंध को समझा जा सकता है।"

यद्यपि पश्चिमी अनुभव से परे पारिस्थितिक नारीवादी तर्क का विस्तार करने में उनका काम महत्वपूर्ण महत्व रखता है, लेकिन उसके निर्माण में समस्याएं हैं। बीना अग्रवाल ने उनकी आलोचना करते हुए कहा कि जबकि उनके अनुभवजन्य साक्ष्य मुख्य रूप से उत्तर पश्चिम भारत की ग्रामीण महिलाओं के साथ उनके काम से लिए गए हैं, जिनमें चिपको आंदोलन की महिला कार्यकर्ता भी शामिल हैं, वह अपने सामान्यीकरण को तीसरी दुनिया की सभी महिलाओं को एक श्रेणी में लाकर पेश करती हैं। ऐसा करने में, विभिन्न वर्गों, जातियों, नस्लों, पारिस्थितिक क्षेत्रों आदि की महिलाएं में अंतर करने में विफल रहती है, जिससे उनका तर्क आधारभूत बन जाता है। एक और विचार जिसकी आलोचना हुई है, वह है पूरे उपमहाद्वीप के लिए प्रकृति और पुरुष के सामंजस्यपूर्ण संयोजन के माध्यम से दुनिया के निर्माण की ब्रह्मांडीय अवधारणा का व्यापक सामान्यीकरण। भारत की विशाल आबादी और अनंत सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को देखते हुए यह एक समस्यात्मक विचार है। भौतिक जीवन में ऐसी ठोस प्रक्रियाओं और सस्थाओं की भी पहचान नहीं की गई है जिन्होंने इन वैचारिक अवधारणाओं को उत्पन्न और रूपांतरित किया है।

एक अन्य समस्या जो अग्रवाल बताते हैं, वह यह है कि शिवा भारत में प्रकृति और मानव समाज के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंधों के टूटने के लिए एकमात्र एजेंसी का श्रेय उपनिवेशवाद और पश्चिमी विज्ञान और विकास के पश्चिमी मॉडल देते हैं। अग्रवाल के अनुसार, हालांकि तीसरी दुनिया में औपनिवेशिक

अनुभव निश्चित रूप से आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सबसे बढ़कर, पारिस्थितिक रूप से विघटनकारी रहा है; इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि यह प्रक्रिया आर्थिक और सामाजिक (लिंग सहित) असमानताओं के पहले से मौजूद आधारों पर चोट करती है।

दूसरी चीज जिसके लिए पारिस्थितिक नारीवादियों की आलोचना की गई है, वह भौतिक जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं और महिलाओं और प्रकृति की अवधारणाओं के साथ उनके संबंधों की अनदेखी कर रही है। यह बताया गया है कि विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भों जैसे कि श्रम का लिंग विभाजन, संपत्ति और शक्ति का असमान वितरण और उत्पादन और प्रजनन के ऐसे अन्य भौतिक पहलुओं के विवरण पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिस्थितिक नारीवादी, विशेष रूप से सांस्कृतिक या आध्यात्मिक नारीवादी पृष्ठभूमि के लोग, विचारधारा की भूमिका पर जोर देते हैं और बाकी सब चीजों को बाहर कर देते हैं। यह विचारों, कल्पना या विचारधारा के महत्व को नकारना नहीं है। यह सच है कि पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था निरंतर उत्पादन और प्रतीकों, रूपकों, अनुष्ठानों, प्रथाओं, विश्वासों और विचारों की एक विस्तृत संरचना के परिवर्तन के माध्यम से खुद को कायम रखती है, जिसमें महिलाओं और प्रकृति के बारे में सोच शामिल हैं, जिनके बारे में पारिस्थितिक नारीवादी बोलते हैं। हालाँकि, य प्रतीक और निर्माण केवल विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं के संदर्भ में अर्थ प्राप्त करते हैं, जिसके भीतर ये उत्पन्न होते हैं। जैसा कि डोनाल्ड वर्स्टर कहते हैं, 'मानसिक संस्कृति' अपने आप नहीं पनपती है, क्योंकि विचार सामाजिक रूप से निर्मित होते हैं और उन समाजों

के संगठन को दर्शाते हैं जो उन्हें पैदा करते हैं, जिसमें उनके उत्पादन के संबंध और सत्ता के पदानुक्रम शामिल हैं। यह कहना उचित नहीं होगा कि सभी पारिस्थितिक नारीवादी भौतिक संबंधों की उपेक्षा करते हैं। सामान्य तौर पर, समाजवादी नारीवादी पृष्ठभूमि के पारिस्थितिक नारीवादी महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंध के ऐतिहासिक और प्रासंगिक आधार पर जोर देते हैं। वे श्रम और शक्ति के लैंगिक विभाजन को विकास के अस्थिर पैटर्न की कुंजी के रूप में देखते हैं जो महिलाओं और प्रकृति दोनों को नुकसान पहुंचाता है। कैरोलिन मर्चेंट जो अपने ऐतिहासिक दृष्टिकोण के लिए जानी जाती हैं, पारिस्थितिकी के संबंध में उत्पादन और प्रजनन के संबंधों के विश्लेषण की आवश्यकता पर जोर देती हैं। उनके विचार में यह सत्ता के बदलाव और विभिन्न समाजों में पितृसत्ता के रूपों में परिणामो परिवर्तनों को चित्रित करने में मदद करता है।

हाल के दिनों में तीसरी विश्व से नए अनुसंधान ने लिंग और पर्यावरण के सवालों पर हमारे दृष्टिकोण को काफी समृद्ध किया है। इस संबंध में बीना अग्रवाल का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने मौजूदा स्थिति को उलटने के लिए रणनीति तैयार करने के लिए पर्यावरणीय क्षय के संरचनात्मक कारणों, इसके प्रभावों और प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण की आवश्यकता पर बल दिया है। वह पारिस्थितिक नारीवादी तर्क की आलोचना करती हैं जो मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था द्वारा निर्मित वैचारिक सोच में महिलाओं और प्रकृति के खिलाफ हिंसा का पता लगाता है। उनके अनुसार, यदि पितृसत्तात्मक सोच को चुनौती दी जानी है तो एक सैद्धांतिक समझ विकसित करने की

आवश्यकता है जिसे "वैचारिक सोच की राजनीतिक अर्थव्यवस्था" कहा जा सकता है। इसके आधार पर वह लिंग और पर्यावरण के मुद्दों को समझने के लिए एक वैकल्पिक ढांचा प्रस्तुत करती है जिसे वह "नारीवादी पर्यावरणवाद" कहती है।

उनके अपने शब्दों में उनके मुख्य तर्कों का एक सिंहावलोकन इस प्रकार हैः

"... प्रकृति के साथ महिलाओं और पुरुषों के संबंधों को उनकी भौतिक वास्तविकता में निहित के रूप में व पर्यावरण के समझने की जरूरत है, साथ विशिष्ठ रूपों में अंतःक्रिया के रूप में। इसलिए, जहां तक लिंग और वर्ग (जाति/नस्ल)–आधारित श्रम विभाजन और संपत्ति और शक्ति का वितरण है, लिंग और वर्ग (जाति/नस्ल) प्रकृति के साथ लोगों की अंतः क्रिया को स्वरूप देते है और लोगों पर पर्यावरणीय परिवर्तन के प्रभाव व उनकी प्रतिक्रियाओं का भी निर्माण करते हैं। और जहां प्रकृति के बारे में ज्ञान उसके आधार पर अनुभवात्मक है, श्रम, संपत्ति और शक्ति के विभाजन जो अनुभव को आकार देते हैं, उस अनुभव के आधार पर ज्ञान को भी आकार देते हैं .... इस अवधारणा में, इसलिए, महिलाओं और पर्यावरण के बीच संबंध को किसी दिए गए लिंग (जाति/नस्ल) और उत्पादन, प्रजनन और वितरण के संगठन द्वारा संरचित के रूप में देखा जा सकता है। वैचारिक निर्माण जैसे कि लिंग, प्रकृति और दोनों के बीच संबंध को इस संरचना के एक हिस्से के रूप में देखा जा सकता है (अंतःक्रियात्मक रूप से) लेकिन संपूर्ण नहीं। इस परिप्रेक्ष्य को मैं "नारीवादी पर्यावरणवाद" कहता हूं''।

वह भारत के विभिन्न क्षेत्रों और उप–क्षेत्रों से एकत्रित आंकड़ों की एक विस्तृत श्रृंखला के आधार पर उपरोक्त परिकल्पना प्रस्तुत करतो है। इस डेटा का विश्लेषण करने के बाद, उसने उन कारकों की पहचान की है जिनके कारण ग्रामीण गरीबों की उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच में कमी या हानि हुई है। वह भारत में ग्रामीण गरीबों के अस्तित्व के लिए सामान्य संपत्ति संसाधनों के महत्वपूर्ण महत्व पर चर्चा करती है और यह पता लगाती है कि ऐसे पर्यावरणीय संसाधनों का व्यवस्थित क्षरण, उदाहरण के लिए वन आवरण में कमी, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट, जल संसाधनों की कमी आदि ग्रामीण लोगों के जीवन को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से गरीब और वंचित। वह सामुदायिक संसाधनों तक पहुंच को कम करने के लिए जिम्मेदार अन्य कारकों के बारे में भी बोलती है जैसे कि राज्य के नियंत्रण का विस्तार और निजी एजेंटों द्वारा विनियोग। वह इस तरह के कारकों पर भी चर्चा करती है:

1) सामुदायिक प्रबंधन के लिए पारंपरिक संस्थानों को कम आंकना,

2) सीमित संसाधनों पर बढ़ती जनसंख्या का निरंतर दबाव, और

3) कृषि से संबंधित पारंपरिक और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का क्षरण।

इसके बाद वह उपरोक्त सभी कारकों के वर्ग–लिंग प्रभावों की जांच करती है और पाती है कि जहां सबसे अधिक कठिनाइयों का सामना गरीब परिवारों को करना पड़ता है, वहीं वास्तव में गरीब किसान और आदिवासी परिवारों की महिलाएं और महिलाएं सबसे अधिक प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती हैं। इसका

कारण घर के भीतर पहले से मौजूद लिंग–आधारित असमानताओं का इस संबंध में पहचाना गया हैः

1) श्रम का विभाजन;

2) निर्वाह–आधारित संसाधनों का वितरण, मुख्य रूप से भोजन और स्वास्थ्य देखभाल;

3) उत्पादक संसाधनों और प्रौद्योगिकी तक पहुंच;

4) श्रम बाजार में स्थिति;

5) रोजगार के अवसर;

6) व्यावसायिक गतिशीलता;

7) प्रशिक्षण तक पहुंच; आदि।

इन असमानताओं को देखते हुए, अग्रवाल प्राकृतिक संसाधनों तक कम पहुंच का महिलाओं पर प्रभाव का आकलन करते हैं। उसने पाया कि इसने ऐसी महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता को विभिन्न तरीकों से खराब कर दिया है जैसेः

1) एक दिन में काम के घंटों की संख्या में वृद्धि,

2) आय के स्तर में कमी,

3) खराब पोषण और स्वास्थ्य देखभाल, और

4) सामाजिक समर्थन नेटवर्क का टूटना।

इनमें से कुछ मुद्दे घरेलू कलह और यहां तक कि आत्महत्या तक बढ़ाने का कारण बने हैं। महिलाओं के स्वदेशी ज्ञान को कम करना और उनका क्षरण करना और आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी द्वारा उनका हाशिए पर जाना एक अन्य महत्वपूर्ण दुर्घटना है जिसे उन्होंने नोट किया।

वह अंततः इस संकट के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करने के लिए आगे बढ़ती है, जिसमें राज्य के साथ–साथ हितधारकों के विभिन्न समूह भी शामिल हैं। इसमें उन्हें राज्य की प्रतिक्रिया त्रुटिपूर्ण और अपर्याप्त लगती है। गैर–राज्य संस्थाओं की प्रतिक्रियाओं की जटिल विविधता में, वह ग्रामीण महिलाओं की प्रतिक्रिया को सबसे उल्लेखनीय और आशापूर्ण मानती हैं। वह पारिस्थितिक उत्थान के लिए आंदोलनों में उनकी उत्साहो भागीदारी और उनके सबसे सार्थक और रचनात्मक परिप्रेक्ष्य और ऐसे मुद्दों की समझ को नोट करती है। इसके आधार पर वह महिलाओं को न केवल पर्यावरण क्षरण, खराब राज्य नीति आदि के शिकार के रूप में देखने का आग्रह करती हैं, बल्कि सकारात्मक परिवर्तन लाने की कोशिश करने वाले महत्वपूर्ण ऐजेंटों के रूप में भी देखती हैं।

भले ही अग्रवाल का काम पूरी तरह से भारत के डेटा पर आधारित है, भौतिक वास्तविकता के पहलू जैसे कि निर्वाह के पैटर्न और सामाजिक संबंध, तीसरी दुनिया के बड़े हिस्सों में कुछ हद तक समान होने के कारण, उनके निष्कर्षों का भारत से परे प्रभाव हो सकता है। इस प्रकार, "नारीवादी पर्यावरणवाद" का

उनका सैद्धांतिक सूत्रीकरण आज महिलाओं और पर्यावरण के महत्वपूर्ण मुद्दों को समझने के लिए सबसे व्यवहार्य विकल्पों में से एक है।

बोध प्रश्न

1) पारिस्थितिक नारीवाद शब्द से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

....

....

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

क) जबकि सेक्स ------------ व्युत्पन्न पहचान है जो प्रजनन अंगों आदि पर आधारित है, लिंग पुरुषों और महिलाओं के बीच ------------ अंतर को संदर्भित करता है।

ख) --------- में भूमि सुधारों ने महिलाओं पर काम के हल्के बोझ के अलावा ------------------------- योगदान दिया है। लगभग प्रत्येक ग्रामीण परिवार के पास कम से कम कुछ दर्जन नारियल के पेड़ हैं, जिससे --------- आवश्यकताओं को पूरा करना बहुत आसान हो जाता है।

ग) लिंग और पर्यावरण के बीच संबंध की अवधारणा मुख्य रूप से पश्चिम में ————————— की छत्रछाया के तहत वैचारिक दृष्टि से की गई है, विशेष रूप से —————————।

घ) कुछ पारिस्थितिक नारीवादी जैसे एरियल के सलेह जीव विज्ञान पर आधारित महिलाओं और प्रकृति के बीच संबंध बनाते हैं। वह जीव विज्ञान और प्रकृति में महिलाओं के ————————————— को भी आधार बनाती है. उनके अनुसार, "महिलाओं का मासिक प्रजनन चक्र, गर्भावस्था के थकाऊ सहजीवन, बच्चे के जन्म की पीड़ा और एक शिशु को दूध पिलाने की खुशी, ये चीजें पहले से ही प्रकृति के साथ सहसंबद्ध होने के ज्ञान में महिलाओं की चेतना को आधार बनाती हैं।"

ड़) वंदना शिव प्रकृति के ————————— या प्रकृति के पारंपरिक भारतीय ब्रह्माण्ड संबंधी दृष्टिकोण को ———————— के रूप में, "गतिविधि और विविधता" के रूप में और "शक्ति की अभिव्यक्ति, ब्रह्मांड के स्त्री और रचनात्मक सिद्धांत" के रूप में सामने रखती हैं, जो "मर्दाना सिद्धांत के संयोजन में" (————————) ... दुनिया बनाता है"।

11.7 सारांश

इस इकाई में आपने सीखा कि कैसे लिंग और पर्यावरण सहसंबद्ध हैं। हमने पारिस्थितिकी के साथ महिलाओं के संबंधों का पता लगाया लेकिन चर्चा केवल

महिलाओं और पर्यावरण के बारे में नहीं थी। पुरुष भी इसके दायरे में आ गए। हमने चर्चा की कि पर्यावरणीय गिरावट का अधिकतम प्रभाव महिलाओं द्वारा कैसे महसूस किया जाता है, विशेष रूप से ग्रामीण, गरीब, भूमिहीन, सीमांत, आदिवासी या छोटे–कृषि परिवारों की। प्रगति और विकास अक्सर विभिन्न तरीकों से महिलाओं के बढ़ते बोझ के साथ जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, ईंधन, चारा और पानी इकट्ठा करने की जिम्मेदारी महिलाओं पर है जो वे अपने आसपास के प्राकृतिक संसाधनों से करती हैं और पर्यावरण की कमी के कारण उन्हें इन्हें हासिल करने के लिए और भी अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। यही कारण है कि चिपको जैसे पर्यावरण आंदालनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी पुरुषों की तुलना में अधिक रही है। एक पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के खिलाफ हिंसा और उनकी अधीनता पर्यावरण के नुकसान के समान है और यह "पुरुषों" और "महिलाओं" दोनों के वैचारिक निर्माणों द्वारा आकार और सूचित किया जाता है।

11.8 शब्दावली

नकद अर्थव्यवस्था : एक आर्थिक प्रणाली, या हिस्सा, जिसमें प्रत्यक्ष डेबिट, स्थायी आदेश, बैंक हस्तांतरण या क्रेडिट कार्ड के बजाय नकद में वित्तीय लेनदेन किया जाता है।

हरित आंदोलन : इसका उद्देश्य अन्य व्यवसायों के साथ सहयोग करके दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाना है। इसका मुख्य लक्ष्य स्वच्छ पानी और प्रचुर मात्रा में

ऊर्जा, कार्बन पदचिह्न को कम करना और अपशिष्ट प्रवाह को कम करना है।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) अनुभाग 11.5 और 11.6 से परामर्श करे।

2) क) जैविक रूप से, सामाजिक और सांस्कृतिक; ख) केरल, समृद्ध प्राकृतिक वनस्पति आवरण, ईंधन; ग) पारिस्थितिक नारीवाद, संयुक्त राज्य अमेरिका; घ) चेतना; ङ) 'भारतीय कल्पना', प्रकृति, पुरुष।

11.10 संदर्भ ग्रंथ

Merchant, Carolyn (1989). *The Death of Nature: Women, Ecology, and the Scientific Revolution*. HarperCollins.

Worster, Donald (Eds.) (1988). *The Ends of the Earth: Perspectives on Modern Environmental History*. Cambridge University Press.

Merchant, Carolyn (1992). *Radical Ecology: The Search for a Livable World*. Taylor and Francis.

d'Eaubonne, Françoise (under publication). *Feminism or Death: How the Women's Movement Can Save the Planet*. Verso Books.

Agarwal, Bina (1992). 'The Gender and Environment Debate: Lessons from India'. *Feminist Studies, Vol. 18, No. 1, pp. 119-158.*

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

Archambault, Anne (1993). ‘A Critique of Ecofeminism’. *Canadian Woman Studies, Vol. 13, No.3, pp. 19-22.*

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY